Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 3, Issue 1 - 2018

डिजिटल साक्षरता व महिला सशक्तिकरण

श्रीमती मजु शर्मा*

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "अब तक महिलाओं की स्थिति नहीं सुधरेगी तब तक इस दुनिया के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है।" यह कथन आज भी उतना ही सत्य है। अवसर मिलने पर हर क्षेत्र में महिलाओं ने तमाम सीमाओं व बंधनों के बावजूद सराहनीय काम किया है।

अकसर हम देखते हैं कि जब घर में बेटा पैदा होता है तो सबके नन और हृदय में खुशी की लहर दौड़ पड़ती है लेकिन बेटी पैदा होती है तो उदासी के बादल छा जाते हैं। अगर हम गहराई से झांककर देखें तो महिला में सब कुछ करने की अपार क्षमता छिपी हुई है। फिर आखिर क्यों असक्षम समझकर महिला को शिक्षा से वंचित होना पड़ता है? सर्वविदित हैं कि कर्तव्य की मांग के अनुसार महिला अपने आपको ढालने की अद्भुत क्षमता रखती है। पुरुष शब्द की निर्मिति स्त्री संतान और व्यक्ति की समष्टि मानी गयी है। मनु का कथन है "केवल पुरुष कोई वस्तु नहीं है अर्थात् वह अपूर्ण ही रहता है, किन्तु स्त्री स्वदेह तथा संतान ये तीन मिलकर ही, पुरुष पूर्ण होता है। इसलिए स्त्री–पुरुष की शरीरार्द्ध और अर्द्धांगिनी मानी गयी है।"

अब बात करते हैं भारतीय महिला की जो अनेक सामाजिक स्तरों, ऐतिहासिक युगों और राजनीतिक परिस्थितियों से होकर गुजरी है जिसकी स्थिति युग के अनुरूप परिवर्तित होती रही है। वैदिक युग में उसकी व्यवस्था अत्यन्त उन्नत और परिष्कृत थी तो मध्ययुगीन समाज में महिला की स्थिति बड़ी दयनीय और शोचनीय हो गई। ब्रेटिश शासन के प्रथम चरण में उस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। कालान्तर में आर्य समाज, ब्रहम समाज जैसी समाज सुधारक संस्थाओं ने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया था, जिसके परिणामस्वरूप स्त्री–शिक्षा का तीव्र गति से विस्तार हुआ। इस काल में महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात महिला शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त सुधार हुआ है। आज महिलाएँ वैज्ञानिक, सामाजिक, राजनीतिक, व्यवसायिक सभी प्रकार को शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। भारत सरकार भी महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 6546 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं। निश्चित रूप से वर्तनान में शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा सरकार के प्रयासों से महिला शिक्षा में प्रगति हो रही है। समाज में कुछ ऐसा परिवर्तन आ रहा है कि अब बेटियों की भूमिका प्रोटेक्ट (Protect) से प्रोटेक्टर (Protector) यानि रक्षित से रक्षक में परिवर्तित हो रही है। आज घर की बेटी पिता का दाहिना हाथ, परिवार का आधार है, सामाजिक पहचान और प्रतिष्ठा का मार्ग भी है।

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण एक भूमण्डलीय (ग्लोबल) मुद्दा है जो सम्पूर्ण विश्व में होने वाले महिला आन्दोलनो विशेषकर तृतीय विश्व की नारीवादियों द्वारा की गई महत्वपूर्ण आलोचनाओं, वाद–विवादों का परिणाम है जो

*प्रवक्ता, आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण, महाविद्यालय, अलवर।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

महिलाओं के प्रति होने वाले अत्याचारों उसकी तथा इनके प्रतिकार के उपायों पर विचार करता है। सशक्तिकरण का शाब्दिक अर्थ है किसी व्यक्ति को कार्य करने की शक्ति प्रदान करना है। अर्थात् राशक्तिकरण एक प्रक्रिया है जो एक बार प्राप्त करने के बाद भी स्वयं संयोजित एवं संवादित होती रहती है।

वस्तुतः आज विश्व में महिलाओं के पक्ष में हवा चल रही है। महिलाओं के समुचित विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनता जा रहा है। 21वीं शताब्दी को महिला शताब्दी के नाम से जाना जाने लगा है। सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के मेल ने दुनिया के हर व्यक्ति को आपस मे जोड़ दिया है। आधुनिक युग के इन संचार साधनों ने महिला को ताकत दिया है। इसलिए स्कूली शिक्षा के साथ–साथ महिलाओं को डिजिटल उपकरणों में प्रशिक्षित करना समय की मांग है। तभी वह घर से बाहर अन्य व्यवसायों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा सकेंगी।

डिजिटल साक्षरता क्या है?

पूरा हिन्दुस्तान डिजिटल भारत की ओर उन्मुख है। डिजिटल भारत के अन्तर्गत इलेक्ट्रॉनिक रूप से सेवाओं को जनता तक पहुँचाना है। डिजिटल साक्षरता के अन्तर्गत व्यक्ति और समुदायों द्वारा अम जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सार्थक कार्य के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की क्षमता को कह सकते हैं। डिजिटल साक्षरता यह जानकारी कौशल और व्यवहार है जिसका इस्तेमाल डिजिटल उपकरणों की व्यापक श्रृंखला जैसे डेस्कटॉप, कम्प्यूटर, लैपटॉप और स्मार्टफोन को चलाने से किया जाता है। डिजिटल तौर पर साक्षर महिला डिजिटल कौशलों की श्रृंखला कम्प्यूटरिंग उपकरणों के बुनियादी सिद्धान्तों की जानकारी, कम्प्यूटर नेटवर्कों का प्रयोग करने के कौशल समुदायों और सामाजिक नेटवर्कों के साथ ऑनलाइन संचार करने में समर्थ होगी। एक महिला को इतना डिजिटल साक्षर होना चाहिए कि वह डिजिटल उपकरणों से किसी सूचना के लिए इंटरनेट पर खोज कर सके व इमेल भेजने और प्राप्त करने में सक्षम हो सकें।

भारत सरकार के साथ कई बडी कम्पनियों ने डिजिटल भारत के सपने को साकार करने की दिशा में काम कर रही हैं। इंटेल ने हाल ही में डिजिटल स्किल्स फॉर इंडिया' पहल का शुभारंभ किया। इसके अंतर्गत डिजिटल कौशल प्रशिक्षण एप्लीकेशन लाया गया है, जो पाँच भारतीय भाषाओं में डिजिटल साक्षरता की दिशा में काम करेगा। सरकार इस दिशा में पूरी तरह सजग है। जिसका परिणाम प्रत्यक्ष रूप से प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में दिखाई दे रहा है। इस योजना द्वारा कुल प्रशिक्षित लोगों में आधे से ज्यादा महिलाएँ हैं। यह साक्षरता महिलाओं को सामाजिक, राजनीतिक रूप से अधिक सशक्त बनाएगी।

महिला सशक्तिकरण के लिए डिजिटल उपकरणों के प्रयोग में दक्षता क्यों आवश्यक?

संचार क्रांति ने बदलाव की नीति को तीव्र कर दिया है। महिलाओं के समग्र विकास हेतु सरकार शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह डिजिटलाईज्ड करने पर काम कर रही है। भारत सरकार ने कई नई योजनाएँ जैसे दीनदयाल उपाध्याय, ग्रामीण कौशल विकास योजना, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना आदि। इन योजनाओं का उद्देश्य युवाओं व महिलाओं को आधुनिक बाजार की जरूरतों के हिसाब से प्रशिक्षित करना है ताकि वे समाज में अपनी सकारात्मक भागीदारी कर सकें। अध्ययन व आंकड़ों से पता चलता है कि आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के बराबर हो जाए तो भारत की जी. डी.पी. में 27 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

जाएगी। अगर महिलाओं को स्वरोजगार की ओर प्रेरित होना है तो इनको स्किल, रिस्किल और अप स्किल को अपनाना ही होगा। नवाचार के साथ चलकर ही आधी आबादी नवभारत के निर्माण में अपना सर्वोतम योगदान कर सकेगी। जीवन को अधिक सुविधाजनक बनाने में सहायता करने के लिए इंटरनेट पर हजारों सेवाएँ उपलब्ध हैं। इंटरनेट पर जानकारी वेबसाइटों में और वेब पृष्टों पर दी जाती है। इस पर सब कुछ खोजा जा सकता है। पाक विधियो तथा स्थानीय समाचारों से लेकर इतिहास बागवानी के लिए सुझाव आदि सभी। कुछ सर्वाधिक लोकप्रिय सर्च इंजन जैसे:–

गूगल www.google.com

याहू www.yahoo.com

बिंग www.bing.com

आरक www.ask.com

डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करके महिला ऑनलाइन समुदाय बनकर किसी भी तरह की सूचना, विचार, व्यक्तिगत संवाद, वीडियो या ऑडियो शेयर कर सकती है। ब्लॉग, वेबसाइट, फेसबुक ट्विटर, हाइक, इंस्टाग्राम, वाट्सैप आदि डिजिटल साधनों के माध्यम से सभी सूचनाऐं, जागरुकता और सामाजिक चेतना सुनिश्चित कर सकती है। इन डिजिटल (मीडिया) उपकरणों का सुफल तभी मिलेगा जब महिला इनका प्रयोग करने में सक्षम होंगी तभी जीवन के हर क्षेत्र में अपनी संपूर्ण संभावनाओं को हासिल कर सकेंगी। इसका ज्वलन्त उदाहरण मार्च 2018 का है। राजस्थान के हनुमानगढ़ में दुष्कर्म की शिकार एक मूकबधिर युवती को लाइव देखकर 1200 किलोमीटर दूर इंदौर के एक दंपति ने पुलिस को सूचना देकर उसकी जान बचा ली। युवती दो दिन से लगातार मदद मांग रही थी। हताश युवती जब वीडियो कॉलिंग ऑनकर लाइव खुदकुशी कर रही थी तो यह पूरा घटनाक्रम इंदौर में मूकबधिर केन्द्र संचालित करने वाले दंपति ज्ञानेन्द्र पुरोहित व मोनिका पुरोहित देख रहे थे। मूकबधिरों की भाषा समझने वाले इस दंपति के नंबर निकालकर युवती ने उनसे संपर्क किया और इशारे में अपनी कहानी बता दी और उनसे पुलिस की मदद पहुंचाने का आग्रह किया। युवती ने वाट्सऐप पर अपनी लोकेशन भी भेजी। गोनिका पुरोहित ने हनुमानगढ़ के एस.पी. को फोन पर यह जानकारी और युवती का पता दे दिया। अंतत: मानव तस्करी यूनिट सक्रिय हुई। युवती का फंदा लगाकर झूलना व पुलिस का मौके पर पहुँचना साथ–साथ ही हुआ और उसे बचा लिया गया। युवती नेट और मोबाइल का बेहतर उपयोग करना जानती थी। डिजिटल तकनीकी के कमाल व जानकारी से ये संभव हो सका। डिजिटलाइजेशन महिला सशक्तिकरण में मील का पत्थर साबित होगा क्योंकि यह उन्हें चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बना सकता है।

डिजिटलाइजेशन में चुनौतियाँ

महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु उनके लिए सुरक्षित वातावरण होना बहुत आवश्यक है। ऐसी कई चुनौतियाँ हैं जिनसे महिलाओं की डिजिटल साक्षरता सीमित हो जाती है।

- शिक्षा का निम्न स्तर प्रगति में मुख्य बाधा है। इसके कारण उनमें कौशल और क्षमता का स्तर उच्च नही हो पाता और वे सरकारी सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पाती हैं।
- ग्रामीण महिलाओं द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) तक ठीक पहुँच न होने से शिक्षा और रोजगार के अवसरों में सुधार से वंचित रह जाती हैं।
- प्रौद्योगिकियों तक ठीक पहुँच न होने से सरकारी योजनाओं/ कृषि विस्तार

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

कार्यक्रमों के जरिए, उपकरणों और सेवाओं की महिलाओं तक पहुँच नहीं है।

- परम्पराऐं, रुढ़ियां व टकसाली शब्दों के तीखे बाण महिला की जिज्ञासा को रोक देते हैं।
- अधिकारों में भिन्नता, पुरुष स्त्रियों से अधिक श्रेष्ठ है, पुरुषों का नियन्त्रण व महिलाओं का अधीनीकरण भी प्रमुख कारण है।

इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक कारण हैं जो तकनीकी दक्षता में रुकावटें उत्पन्न कर रहे हैं। ग्रामीण व शहरी महिलाओं की स्थिति के बीच में बड़ा अन्तर विद्यमान है। आज भी अधिकांष ग्रामीण महिलाऐं असंगठित क्षेत्र, कृषि और सहायक गतिविधियों लघु उद्योगों आदि में कार्यरत हैं जो इन सभी उपकरणों से अनभिज्ञ हैं। डिजिटल तकनीकों के आने के बाद भी इसमें दक्षता की कमी के कारण शहरी महिलाओं की तुलना में ग्रामीण महिलाओं में यह अंतर और भी बढ गया है।

महिला जीवन में डिजिटल दक्षता का महत्व

डिजिटल क्रान्ति के युग में महिला की सामाजिक स्थिति में बदलाव के लिए मीडिया (डिजिटल उपकरण) महत्वपूर्ण उपकरण साबित हो सकता है। यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जिसके माध्यम से हम अपनी सुरक्षा ही नहीं कर सकते अपितु आत्मनिर्भर भी बन सकते हैं। अपने कौशल, (Skill) हुनर, (Talent) व समय को सही जगह लगाकर कुछ Productive करके इंटरनेट के माध्यम से व्यवसाय कर सकती हैं।

इंटरनेट की मदद से नए और पुराने सामान बेचे जाने का चलन है। नए सामानों में अपनी क्रिएटिविटी से बनाए गए सामान जैसे पेंटिंग्स, डिजाइन कपड़े, पर्स वगैरहा बेच सकती हैं। मार्केटिंग स्किल्स रखने वाली महिलाऐं ऑनलाइन सेलिंग के लिए अपने को अमेजन, फिलपकार्ड, स्नैपडील, शॉपक्लूज आदि जैसी साइट्स के सेलर रजिस्ट्रेशन पेज पर जाकर अपने बिजनेस डिटेल्स की जानकारी देकर घर बैठे बिजनेस कर सकती है। इन उपकरणों का प्रयोग जहां प्रगति व विकास का द्योतक है। यदि इनका दुरुपयोग होता है तो या फिर महिला इनको अपना हथियार बना लेती है तो स्वयं के लिए घातक व समाज को गर्त में ले जा सकती है। इसलिए इनका प्रयोग कब, कहां व कितना इसकी समझ अवश्य रखनी होगी। यदि इनका प्रयोग तर्कसंगत तरीके से होगा तो नतीजे बेहतरीन होंगे। टेक्नोलॉजी पर जरूरत से अधिक निर्भर होना भी चिंता का विषय है। निर्भरता की वजह से कई समस्याएं खत्म हो सकती हैं तो वहीं कई तरह की अन्य परेशानियां जीवन में आ सकती हैं। हर अच्छे–बुरे अनुभव Socialsites पर शेयर करके हर बात update करते रहना सुरक्षात्मक नहीं है। ऐसा न हो कि जो दवा है वही दर्द बन जावे। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि इन साधनों का प्रयोग संयम और जिम्मेदारी के अलावा तर्कसंगत रूप से किया जाये तो नतीजे बेहतर होगें व उद्देश्यों को पूरा करना आसान होगा।

इस प्रकार इन डिजिटल उपकरणों का प्रयोग मनोरंजन के अलावा सामाजिक सुधार के लिए किया जाये तो निश्चित रूप से इसके परिणाम बेहतर होगें। मीडिया (डिजिटल उपकरण) महिला को जागरुक करने में सशक्त माध्यम बन सकता है। बशर्ते इसका उपयोग सकारात्मक संदेशों को बढ़ावा देने के लिए किया जावे।

रोटी, कपड़ा और मोबाइल का जुमला तो आज बिल्कुल सटीक बैठ चुका है परन्तु आवश्यकता है इंटरनेट द्वारा महिलाओं का एक बड़ा तबका जुड़े। जब तक निर्भरता दूसरों पर बनी रहेगी तब तक उसको बदलने का दावा कोई नहीं कर सकता। दुर्भाग्यपूर्ण

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

स्थिति है कि एक बड़ी महिला आबादी जिन्हें वाकई इन उपकरणों की आवश्यकता है उनको इन माध्यमों तक पहुँचाने की जरूरत ही महसूस नहीं होती। डिजिटल कौशल विकास समय की जरूरत है और देश की माग भी। इससे न सिर्फ महिलाएं आर्थिक रूप से सक्षम होगी अपितु देश के उद्योग और सेवा क्षेत्र की तस्वीर ही बदल देंगी। इसलिए महिलाओं को इस मुहिम से जुड़ना अहम बिन्दु है क्योंकि वे सदियों से अर्थव्यवस्था को रीढ़ रही है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार दुनिया का कल्याण तब तक नहीं हो सकता जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता है केवल एक पंख पर उड़ना पक्षी के लिए संभव नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका: कौशल विकास से सशक्त होती महिलाएँ डॉ. सीमा, प्रकाशन– सूचना व प्रसारण मंत्रालय, लोधी रोड, नई दिल्ली।
[2]. राजस्थान पत्रिका 19 मार्च 2018 विडीओ कॉलिंग ने बचाई मूक–बधिर की जान, प्रकाशन–पुराना औद्योगिक क्षेत्र, ईटाराना, अलवर (राज.)
[3]. http/www.newswriters.in/2016.
[4]. http/www.gyanipandit.com.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501